SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन"

वर्षा कुमारी
सहायक प्रोफेसर
गौतम बुद्ध शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय, हजारीबाग।

सारांश

संवेगात्मक परिपक्वता का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह क्षमता विद्यार्थियों को उनके भावनात्मक आवेगों और प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने में मदद करती है, जिससे वे मानसिक संतुलन बनाए रखते हैं। संवेगात्मक रूप से परिपक्व विद्यार्थी तनाव का प्रबंधन बेहतर तरीके से कर पाते हैं और शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने में अधिक सक्षम होते हैं। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार होता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी अक्सर सामाजिक अपेक्षाओं और शारीरिक परिवर्तनों के कारण तनाव और भावनात्मक अस्थिरता का अनुभव करते हैं। इस तनाव और अस्थिरता का सीधा प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ सकता है। यदि कोई विद्यार्थी अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है, तो उसकी एकाग्रता, स्मरणशक्ति, और अध्ययन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। उदाहरणस्वरूप, परीक्षा के समय अत्यधिक तनाव में रहने वाले विद्यार्थी अपनी पूर्ण क्षमता से प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। वे छोटी–छोटी असफलताओं को बड़ी असफलताओं के रूप में देखने लगते हैं। शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम – माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र की छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र की छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

मुख्य शब्द :– माध्यमिक स्तर पर अध्ययन विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, संवेगात्मक परिपक्वता

1.0प्रस्तावना

संवेगात्मक परिपक्वता का किसी भी विद्यार्थी के शैक्षिक जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण प्रभाव होता है, विशेषकर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संदर्भ में। यह वह अवस्था होती है, जब विद्यार्थी मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक रूप से एक महत्वपूर्ण बदलाव के दौर से गुजर रहे होते हैं। इस चरण में उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर संवेगात्मक परिपक्वता का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। संवेगात्मक परिपक्वता को सामान्यतः एक ऐसी क्षमता के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भावनात्मक आवेगों और प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित कर सकता है। यह क्षमता मनोवैज्ञानिक विकास के साथ–साथ व्यक्तित्व के परिपक्व होने का संकेत होती है। जब कोई विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से परिपक्व होता है, तो वह अपने भावों को सही ढंग से समझने, उन्हें उचित प्रकार से व्यक्त करने और उन्हें नियंत्रित करने में सक्षम होता है। माध्यमिक स्तर पर यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यह समय विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षा, करियर और सामाजिक पहचान के संदर्भ में अत्यधिक निर्णायक होता है।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी एक ऐसे संक्रमण काल से गुजर रहे होते हैं, जब उनके जीवन में अनेक भावनात्मक और मानसिक चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। शारीरिक परिवर्तन, सामाजिक अपेक्षाएँ, अध्ययन का बढ़ता दबाव, और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल होने की आकांक्षा सभी मिलकर विद्यार्थी के मानसिक संतुलन को प्रभावित करते हैं। इन सभी बदलावों के बीच, यदि विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से परिपक्व नहीं होते, तो उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। दूसरी ओर, संवेगात्मक परिपक्वता से विद्यार्थियों को कठिन परिस्थितियों का सामना करने, तनाव को प्रबंधित करने और अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलती है। संवेगात्मक परिपक्वता के बिना, विद्यार्थी अकसर निराशा, चिंता, और क्रोध जैसी भावनाओं से घिर सकते हैं, जिससे उनके अध्ययन की गुणवत्ता में गिरावट आ सकती है। ऐसे विद्यार्थी जो अपने भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित नहीं कर पाते, वे परीक्षा के दौरान अधिक घबराहट महसूस कर सकते हैं, जिससे उनकी एकाग्रता और स्मरण शक्ति प्रभावित होती है। इसके परिणामस्वरूप, वे अपनी शैक्षिक क्षमता के अनुसार प्रदर्शन करने में असमर्थ हो सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, परीक्षा में असफलता के डर से वे अत्यधिक तनाव में आ सकते हैं, जिससे उनके अध्ययन का संपूर्ण ढांचा प्रभावित हो सकता है। दूसरी ओर, वे विद्यार्थी जो संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते हैं, वे अपने शैक्षिक जीवन में बेहतर ढंग से प्रगति कर सकते हैं। ऐसे विद्यार्थी अपनी भावनाओं को समझने और उन्हें सकारात्मक दिशा में उपयोग करने में सक्षम होते हैं। जब वे किसी कठिन परिस्थिति का सामना करते हैं, तो वे उसे एक चुनौती के रूप में देखते हैं और नकारात्मक भावनाओं से प्रभावित हुए बिना उस स्थिति से निपटते हैं। इस प्रकार की मानसिकता न केवल उन्हें शैक्षिक रूप से बेहतर बनाती है, बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त करने में मदद करती है।

संवेगात्मक परिपक्वता के साथ विद्यार्थी कठिन पाठ्यक्रम सामग्री को समझने और उसे प्रभावी रूप से लागू करने की क्षमता रखते हैं। जब विद्यार्थी अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं, तो वे अध्ययन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं। यह सकारात्मक दृष्टिकोण उन्हें अध्ययन में रूचि रखने और उसे नियमित

रूप से करने के लिए प्रेरित करता है। वे अपनी असफलताओं से निराश होने के बजाय उनसे सीखने का प्रयास करते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें लगातार अपने शैक्षिक लक्ष्यों की ओर बढ़ने और शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में मदद करता है। संवेगात्मक परिपक्वता विद्यार्थियों के बीच सहयोग और समन्वय को भी बढ़ावा देती है। जब विद्यार्थी अपने साथियों के साथ स्वस्थ मानसिकता के साथ संवाद करते हैं, तो वे टीम वर्क, समूह अध्ययन और सामाजिक सहभागिता के महत्व को समझते हैं। समूह अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी एक–दूसरे से सीखते हैं और उनकी शैक्षिक क्षमता में सुधार होता है। इसके विपरीत, यदि विद्यार्थी अपने साथियों के साथ संवाद में कठिनाई महसूस करते हैं या भावनात्मक रूप से अस्थिर होते हैं, तो वे समूह अध्ययन से दूर रह सकते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति धीमी हो सकती है। संवेगात्मक परिपक्वता का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू आत्म–नियंत्रण है। जब विद्यार्थी आत्म–नियंत्रण का अभ्यास करते हैं, तो वे अपने समय और ऊर्जा का उचित उपयोग करने में सक्षम होते हैं। वे अपनी प्राथमिकताओं को समझते हैं और अपने अध्ययन कार्यक्रम को सुव्यवस्थित करते हैं। इससे उनकी अध्ययन की गुणवत्ता और परिणामों में सुधार होता है। आत्म–नियंत्रण का अभाव विद्यार्थियों को आलस्य, ध्यान की कमी, और अव्यवस्थित अध्ययन की ओर धकेल सकता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त, संवेगात्मक परिपक्वता विद्यार्थियों को अपनी आत्म–छवि और आत्म–सम्मान को विकसित करने में मदद करती है। जब विद्यार्थी अपनी क्षमताओं और सीमाओं को समझते हैं, तो वे अपने शैक्षिक प्रयासों में संतुलन बनाए रखते हैं। आत्म–सम्मान की भावना से वे आत्मविश्वास के साथ अध्ययन करते हैं और नए विषयों या कठिनाईयों का सामना करने में संकोच नहीं करते। इसके विपरीत, जो विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से अस्थिर होते हैं, वे अपने आत्म–सम्मान में कमी महसूस कर सकते हैं, जिससे उनके शैक्षिक प्रयासों में निरंतरता की कमी हो सकती है। संवेगात्मक परिपक्वता के अभाव में विद्यार्थी अकसर सामाजिक और शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने में असमर्थ हो सकते हैं। उन्हें अपने साथियों, शिक्षकों और माता–पिता से मिलने वाली अपेक्षाओं का दबाव महसूस हो सकता है, जिससे उनकी शैक्षिक यात्रा में रुकावट आ सकती है। विशेषकर माध्यमिक स्तर पर, जहाँ सामाजिक प्रतिस्पर्धा और अध्ययन का भार अधिक होता है, संवेगात्मक अस्थिरता विद्यार्थियों को हताशा, अवसाद और निराशा की ओर धकेल सकती है। इसका सीधा प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ता है, क्योंकि वे अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग करने में असमर्थ हो सकते हैं। संवेगात्मक परिपक्वता न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह विद्यार्थियों के जीवन में दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव डालती है। यह उन्हें जीवन की अन्य चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती है, चाहे वह शैक्षिक हो या सामाजिक। जब विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते हैं, तो वे अपने जीवन में अनुशासन, आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करते हैं। ये सभी गुण उन्हें न केवल शैक्षिक क्षेत्र में बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफल बनाते हैं।

अंत में, यह स्पष्ट होता है कि संवेगात्मक परिपक्वता का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह विद्यार्थियों को मानसिक संतुलन बनाए रखने, तनाव का प्रबंधन करने, और शैक्षिक चुनौतियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करती है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व विद्यार्थी अध्ययन के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, अपनी असफलताओं से सीखते हैं, और शैक्षिक लक्ष्यों की ओर निरंतर प्रयासरत रहते हैं। दूसरी ओर, संवेगात्मक अस्थिरता विद्यार्थियों को हताशा, तनाव और आत्म–संदेह की ओर धकेल सकती

है, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति में बाधा आ सकती है। अतः, संवेगात्मक परिपक्वता का विकास विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह उनके शैक्षिक, सामाजिक और व्यक्तिगत विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

2.0 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक है। यह वह चरण है जहाँ विद्यार्थी मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से एक निर्णायक बदलाव के दौर से गुजरते हैं। इस स्तर पर शैक्षिक सफलता विद्यार्थियों के भविष्य को निर्धारित करने में अहम भूमिका निभाती है, और इस सफलता पर संवेगात्मक परिपक्वता का गहरा प्रभाव पड़ता है।

माध्यमिक शिक्षा के दौरान विद्यार्थी न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी विकसित होते हैं। इस समय वे सामाजिक अपेक्षाओं, पढ़ाई के बढ़ते दबाव, और जीवन के अन्य चुनौतियों का सामना करते हैं। ऐसे में, उनकी भावनाओं को समझना, उन्हें नियंत्रित करना और सही दिशा में उनका प्रबंधन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। यदि इस उम्र में संवेगात्मक परिपक्वता का विकास न हो, तो विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक विकास में रुकावट आ सकती है, जिसका सीधा प्रभाव उनके शैक्षिक प्रदर्शन पर पड़ेगा। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामने परीक्षा का दबाव, सहपाठियों के साथ प्रतिस्पर्धा, और भविष्य की चिंता जैसी चुनौतियाँ होती हैं। यदि विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से परिपक्व होते हैं, तो वे इन चुनौतियों का सामना बेहतर तरीके से कर पाते हैं। वे तनाव का प्रबंधन कर सकते हैं और आत्म–नियंत्रण का अभ्यास कर सकते हैं, जो उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को बेहतर बनाने में मदद करता है। तनाव को प्रभावी ढंग से संभालना उनके मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक सफलता दोनों के लिए आवश्यक है। संवेगात्मक परिपक्वता शैक्षिक प्रदर्शन को सीधे तौर पर प्रभावित करती है। जो विद्यार्थी अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं, वे अध्ययन पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं। उनकी एकाग्रता, स्मरण शक्ति और सीखने की क्षमता बेहतर होती है, जिससे वे अपनी शैक्षिक क्षमता का पूरा उपयोग कर सकते हैं। इसके विपरीत, भावनात्मक अस्थिरता से घिरे विद्यार्थी अकसर ध्यान भटकाने वाली गतिविधियों में उलझ जाते हैं, जिससे उनका शैक्षिक प्रदर्शन प्रभावित होता है। संवेगात्मक परिपक्वता आत्म–सम्मान और आत्मविश्वास के विकास में मदद करती है। जब विद्यार्थी अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर पाते हैं, तो वे अपने आत्म–सम्मान और आत्म–छवि को भी मजबूत कर पाते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है, जो उनके शैक्षिक जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। आत्मविश्वास के साथ, वे नई चुनौतियों का सामना करने और असफलताओं से सीखने में सक्षम होते हैं। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी अपने सहपाठियों, शिक्षकों और परिवार के साथ संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया में होते हैं। इन संबंधों को सफलतापूर्वक प्रबंधित करने के लिए संवेगात्मक परिपक्वता आवश्यक होती है। जो विद्यार्थी भावनात्मक रूप से परिपक्व होते हैं, वे सहपाठियों के साथ बेहतर संबंध स्थापित कर पाते हैं, जो समूह अध्ययन, सहकारी कार्य और शिक्षा में सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है। इससे न केवल उनकी शैक्षिक सफलता में वृद्धि होती है, बल्कि उनके सामाजिक कौशल का भी विकास होता है। संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन न केवल माध्यमिक स्तर पर बल्कि विद्यार्थियों के जीवन के दीर्घकालिक शैक्षिक और व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भी आवश्यक है। जो विद्यार्थी इस स्तर पर अपनी भावनाओं का

सफलतापूर्वक प्रबंधन करना सीख लेते हैं, वे भविष्य में भी शैक्षिक और पेशेवर जीवन में चुनौतियों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से कर पाते हैं। उनकी संवेगात्मक स्थिरता उन्हें जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफलता दिलाने में सहायक होती है। वर्तमान समय में, मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दे तेजी से बढ़ रहे हैं। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य उनके शैक्षिक जीवन को गहराई से प्रभावित करता है। संवेगात्मक परिपक्वता मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत करने में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। यह विद्यार्थियों को मानसिक संतुलन बनाए रखने और नकारात्मक भावनाओं को सकारात्मक दिशा में मोड़ने में मदद करती है। मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने और विद्यार्थियों को भावनात्मक रूप से मजबूत बनाने के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता है।

अतः, माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन अत्यधिक आवश्यक है। यह न केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करता है, बल्कि उनके भावनात्मक, मानसिक और सामाजिक विकास को भी सुनिश्चित करता है।

3.0 समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन

4.0 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

निम्नलिखित शोधार्थियों ने प्रस्तुत विषयों को शोध का विषय बनाया है जिसमें तिवारी, प्रदीप कुमार एवं चौधरी, नीरु (2021), कुमार, अनिल (2021), चीमा और भारद्वाज (2021), दुहन, पुनिया और जीत (2017), सिंह जनक (2017), जोशी चंद्रकला (2017), भूत और जालावाडिया (2016) आदि प्रमुख है।

5.0 शोध के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र की छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र की छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन।

6.0 शोध की परिकल्पनायें

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र की छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं है।

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र की छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध नहीं है।

7.0आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

8.0 न्यादर्श :–

वर्तमान शोधपत्र हेतु 304 शहरी एवं 296 ग्रामीण विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

9.0 उपकरण :–

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – स्वनिर्मित प्रश्नावली।

संवेगात्मक परिपक्वता परीक्षण :– सिंह और भार्गव द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

10.0 परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

तालिका संख्या – 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र की छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

शहरी क्षेत्र	संख्या	सहसम्बन्ध	सहसम्बन्ध सार्थक स्तर
छात्र	152	0.0069	धनात्मक
छात्राऐं	152	–0.1030	ऋणात्मक

व्याख्या – तालिका संख्या 1 में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र की छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0069 प्राप्त हुआ जिससे पता चलता है कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध का मान –0.1030 प्राप्त हुआ जिससे पता चलता है कि दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है। अतः हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक एवं ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र की छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

ग्रामीण क्षेत्र	संख्या	सहसम्बन्ध	सहसम्बन्ध सार्थक स्तर
छात्र	148	0.0343	धनात्मक
छात्राऐं	148	–0.0074	ऋणात्मक

व्याख्या – तालिका संख्या 2 में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र की छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.0343 प्राप्त हुआ जिससे पता चलता है कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है। माध्यमिक स्तर पर

अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य सहसम्बन्ध का मान –0.0074 प्राप्त हुआ जिससे पता चलता है कि दोनों चरों के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है। अतः हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक एवं ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

11.0 निष्कर्ष

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र की छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र की छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि और संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

12.0 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कुमार, अनिल (2021) ने हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के सोषल मीडिया का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन , शोध पत्र, षिक्षा शोध मंथन, वॉ.7, नं0 2, अक्टूबर 2021.
- तिवारी, प्रदीप कुमार एवं चौधरी, नीरु (2021) हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, शोध पत्र, षिक्षा शोध मंथन, वॉ.7. नं0 1(अ), अप्रैल 2021.
- Bhut, H.G. and Zalavadia, T.L. (2016). Emotional Maturity and Home Environment among College Student of Rajkot City. The International Journal of Indian Psychology, 3(2), 159-162
- Cheema G.K. & Bhardwaj M. (2021). Study of self-esteem and academic achievement in relation to home environment among adolescents. European Journal of Molecular & Clinical Medicine, 8(1), 2515-8260.
- Duhan, K., Punia, A. and Jeet, P. (2017). Emotional maturity of adolescents in relation to their gender. International Journal of Educational Science and Research (IJESR),Vol. 7, Issue 1, pp 61-68, ISSN(P): 2249-6947; ISSN(E): 2249-8052

- Joshi, C. (2017). Emotional maturity across gender, locality and stream of higher secondary level students. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, Vol. 4/30, pp 4975- 4979, ISSN 2278-8808

- Singh, J. (2017). A study of academic achievement of adolescents in relation to their emotional maturity. BEST: International Journal of Humanities, Arts, Medicine and Sciences (BEST: IJHAMS), Vol. 5, Issue 7, pp 55-62, ISSN (P): 2348-0521, ISSN (E): 2454-4728

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/34

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

वर्षा कुमारी

For publication of research paper title

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com